डा.शिवाजी विष्णू निकम
एम.ए.पीएच. डी.
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध –निर्देशक
हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॅालेज,
सातारा (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डा.शिवाजी विष्णू निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॅालेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि कु.सुजाता कृष्णत पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध "जगदीश गुप्त के खण्डकाव्यों में बुध्दचरित और दर्शन (बोधिवृक्ष और गोपा–गौतम के परिप्रेक्ष्य में)" मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। कु.सुजाता कृष्णत पाटील के शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। सम्पूर्ण लघु–शोध–प्रबंध को आरंभ से अंत तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

सातारा
दिनांक : 28-12-96

डा.शिवाजी विष्णू निकम
शोध निर्देशक के हस्ताक्षर

अ नु शं सा

हम संस्तुति करते हैं कि, कु॰सुजाता कृष्णत पाटील द्वारा प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध - "जगदीश गुप्त के खण्डकाव्यों में बुध्दचरित और दर्शन" ‡बोधिवृक्ष और गोपा गौतम के परिप्रेक्ष्य में‡ परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध कला विद्या शाखा के अन्तर्गत हिन्दी विषय से संबंधित आधुनिक काव्य विधा में सन्निविष्ट है।

प्रा॰जयवंत जाधव
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा

L. B. S. COLLEGE SATARA

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा

सातारा

दिनांक : 28-12-96

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

==========

प्र ख्या प न

==========

जगदीश गुप्त के खण्डकाव्यों में बुध्दचरित और दर्शन

(बोधिवृक्ष और गोपा गौतम के परिप्रेक्ष्य में)

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना हैं, जो एम्.फिल. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

सातारा

दिनांक : 28-12-96

Patil

कु. सुजाता कृष्णत पाटील

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

==========

भूमिका

==========

नयी कविता के प्रतिभा–संपन्न कवि डा.जगदीश गुप्तजी ने जीवन के सभी समस्याओं पर अपने साहित्य के माध्यम से बहुतही कुशलतापूर्वक अपनी लेखनी चलाई है। उनकी साहित्य–यात्रा का आरंभ काव्य से ही हुआ है। वे एक अच्छे कवि होने के साथ–साथ वे एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता, संपादक एवं चित्रकार भी हैं। उन्होंने हिंदी कविता को एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डा.जगदीश गुप्तजी का बचपन सीतापुर के साहित्यिक वातावरण में गुजरा। बचपन से ही साहित्यिक वातावरण का प्रभाव ऊनपर होने के कारण उनकी प्रतिभा शक्ति अधिकाधिक विकसित होती रही। उनमें बचपन से ही कविता में रूचि रही है। काव्य पठन करने की आस्था उनमें आरंभ से ही रही है। ब्रजभाषा काव्य के लालित्य ने उन्हें आरंभ में ही मोह लिया। आगे चलकर वे छायावाद की ओर झुके इस काल में इन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया जिसके कारण इन्हें मौलिक काव्य लिखने की प्रेरणा मिली। डॉ. जगदीश गुप्तजी सामान्य जन की आशा आकांक्षाओं के कवि हैं। यही कारण है कि गुप्तजी के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ता गया और उनके समस्त काव्य के पीछे होनेवाली प्रेरणा को जानने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई। यों तो उनके साहित्य को लेकर कुछ आलोचनात्मक पुस्तके तैयार हुई है, तथा कुछ शोध छात्रों ने उनके साहित्यपर अपने शोध–ग्रंथ लिखे हैं। लेकिन उनके काव्य में प्रस्तुत बुध्दचरित और दर्शन के पीछे कौनसी प्रेरणा है " इसे आज तक किसी ने स्पष्ट नहीं किया है। और किसी भी साहित्यकार के साहित्य का मूल्य तब तक किसी नही किया जा सकता कि जब तक उसके निर्माण के मूल में कार्य करनेवाले एवं निर्माण के लिए प्रेरणा देनेवाले तत्वों को स्पष्ट नहीं किया जाता। अतः मुझे इस बात का हर्ष हो रहा है कि मैंने गुप्तजी के "बोधिवृक्ष" और "गोपा–गौतम" में स्थित बुध्दचरित और दर्शन पर लघु–शोध–प्रबंध के द्वारा शोध कार्य किया है। एक तरह से यह खेद का विषय भी रहा है कि "गुप्त" जैसे श्रेष्ठ प्रगतिशील एवं मानवतावादी विचाराधारा के कवि के काव्य में प्रस्तुत बुध्दचरित , दर्शन आज तक किसी ने नहीं किया। लेकिन शोधकर्ता एस्.वाय.शिंदे द्वारा लिखित "जगदीश गुप्त के शम्बूक खण्डकाव्य में वर्णित समस्याओं का अनुशीलन" लघु–शोध–प्रबंध को छोडकर उनके काव्य पर स्वतंत्र

रूप से कोई काम नहीं हुआ है। अतः जगदीश गुप्तजी के काव्य में बुध्दचरित और दर्शन का चित्रण करना मैंने अपना परम कर्तव्य समझा।

आज जब हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल में नये कवियों के काव्य की बाढ-सी आ रही है और अपने काव्य को प्रखर बनाने के लिए कोरी भावुकता तथा नग्न यथार्थता को अपनाया जा रहा है, तब मौलिक रचनाओं के निर्माण की मूल प्रेरणा को उजागर करना महत्वपूर्ण लग रहा है। गुप्त जैसे अनुभवसिध्द कवि के साहित्य का दर्शन करना अनिवार्य बन रहा है। इस कार्य में मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध एक विनम्र प्रयास मात्र रहा हैं।

मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया है। मेरे शोध प्रबंध का प्रथम अध्याय "जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व और कृतित्व" है। इसमें गुप्तजी का जन्म तथा जन्मस्थान, बचपन, मेधावी छात्र, चित्रकारिता, शिक्षा, शोध-ग्रंथ, अध्यापन, रचना सम्मान, अभिरूचियाँ, और दिशाएँ, कला संदर्भ, शिल्प सहयोग, मूर्ति एवं पुरातत्व विशेष संदर्भ, प्रातिनिधिक रचनाओं का परिचय दिया हैं।

द्वितीय अध्याय में खण्डकाव्य की सैध्दान्तिक समीक्षा की है। तृतीय अध्याय में जगदीश गुप्त के दो खण्डकाव्यो का सामान्य परिचय कराया है। चतुर्थ अध्याय में "बोधिवृक्ष" और "गोपा गौतम" में वर्णित बुध्दचरित का अंकन किया है। पंचम अध्याय में जगदीश गुप्त के दो खण्डकाव्य में उद्धृत बौध्द दर्शन को स्पष्ट किया है। और छटा अध्याय है समापन या उपसंहार। पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दति से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में समापन में दिये हैं। प्रबन्ध के अन्त में संदर्भ -ग्रंथ-सूची दी गयी हैं।

==========

कृतज्ञता ज्ञापन

==========

लघु–शोध–कार्य के संकल्प की मूर्ति श्रध्देय गुरूवर डा.शिवाजी निकमजी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल हैं। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे संपन्न होता? "गुरू बीन कौन बताये बात" आपने प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्ततक अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजुद आपने इस लघु–शोध–प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आपके इस अनुग्रह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है। आपके इसी स्नेह प्रेरणा और आशिर्वाद की मैं निरन्तर अभिलाषी रहूँगी।

मुझपर दुसरा ऋण है श्रध्देय प्रा.डा.पी.एस.पाटील, प्रा.डा.यादवराव बाबुराव धुमाल, प्रा.राजेंद्र इंगोले, प्रा.डा.गजानन सुर्वे, प्रा.डी.एम.माळी, श्री.दिलिप शहा, लाल बहादुर शास्त्री कॅालेज के प्राचार्य पुरूषोत्तम सेठ के प्रेम और सहायता के बिना मैं इस शोधकार्य की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। आपने प्रेरणा का दीप जलाकर मुझे रोशनी दी। उन्होंने हर समय मुझे उत्साहित किया। उनके उपकार से ऋण होना मेरे लिए संभव नहीं है। भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे सन्तोष होगा।

उपर्युक्त शुभचिंतको के अतिरिक्त मुझे अधिक से अधिक पढने की जिद रखनेवाले मेरे परमपूज्य माताजी और पिताजी के आशीर्वचन इस शोधकार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए है। मेरी प्रिय बहन सरिता, दोनों भाई जिनके सहायता के बिना मेरे लिए हर कोई कार्य असंभव है, उन सबकी दुवा से ही मैं यह कार्य पुरा कर सकी मैं निरन्तर उनके आशीर्वाद की छत्रछाया में रहने की कामना करती हूँ। मेरी मुँह बोली दीदी प्रा.कु.नसरीन शेख और मेरी सहेली कु.सुरेखा माने की प्रेरणा भी मुझे मिली। श्रीयुत शशिकांत मोरे ने भी मुझे सहायता की उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल, शिवाजी कॅालेज, सातारा के ग्रंथपाल, सदगुरू गाडगे महाराज कॅालेज कराड के ग्रंथपाल श्री. भोसले की सहायता के प्रति मैं उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

मैं उन कवियों, लेखकों तथा आलोचकों विद्वानों की भी सविनय आभारी हूँ कि जिनकी रचनाओं एवं शोध–ग्रंथ से मैंने किसी न किसी रूप से सामग्री ग्रहण की है।

अन्त में लघु–शोध–प्रबंध का सुचारू रूप से टंकलिखित करने का काम **रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा** के श्री. मुकुन्द ढवळेजी और उनके सहयोगी श्री. राजू कुलकर्णी, श्री. सुशीलकुमार काम्बलेजी ने बडी आत्मीयता से किया, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।